

जो वादी को सिद्ध करने के लिये अभिमत है, वह 'अभिप्रेत' होता है।

अभेदस्वभाव

- गुणगुण्याद्येकस्वभावादभेदस्वभावः।

(आ.प. 113)

गुण और गुणी का एक स्वभाव होने से 'अभेदस्वभाव' है।

अमूर्त

- जे खलु इंदियगेज्झा विसया जीवेहि होंति ते मुत्ता।

(पंचा. 89)

जो पदार्थ जीवों के इन्द्रियग्राह्य विषय हैं, वे मूर्त होते हैं।

- रूपादिगुणविरहाद् अमूर्ताः।

(स.सि. 5/39/602)

रूप आदि गुण से रहित होने से (पदार्थ) 'अमूर्त' होते हैं।

अमूर्तत्व

- अमूर्तस्य भावोऽमूर्तत्वं रूपादिरहितत्वम्।

(आ.प. 104)

अमूर्त के भाव को अर्थात् स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण से रहितपने को 'अमूर्तत्व' कहते हैं।

अयथार्थ ज्ञान के भेद

- अयथार्थं च विपर्ययसंशयाऽनध्यवसायाः।

(भि.न्या. 1/11)

अयथार्थ ज्ञान के तीन भेद हैं—विपर्यय, संशय और अनध्यवसाय।

अयुतसिद्धत्व

- वैशेषिकशास्त्रे हि प्रसिद्धम्—'अपृथगाश्रय-वृत्तित्वम् अयुतसिद्धत्वम्'।

(आप्त. 44, पृ. 110)

वैशेषिक शास्त्र में प्रसिद्ध है—अपृथक् (रूप से एक) आश्रय में रहना 'अयुतसिद्ध' पना है (अर्थात् जिन दो पदार्थों) की अभिन्न (यानी एक) आश्रय में वृत्ति, स्थिति होती है, वे 'अयुतसिद्ध' हैं।

अयुतसिद्धि

- समवर्तित्वलक्षणसमवायभाजाम् अयुतसिद्धिरेव, न पृथग्भूतत्वम् इति।

(पंचा.त.प्र. 50)

(अनादि-अनन्त) सहवृत्ति होना—यही 'समवाय' है, ऐसा समवाय जिनमें (जैसे—द्रव्य व गुण में) है, वहां उनकी अयुतसिद्धि ही है, अर्थात् उनका कभी भी पार्थक्य नहीं है।

अयोगव्यवच्छेद

- विशेषणसंगतैवकारोऽयोगव्यवच्छेदबोधकः। यथा—शंखः पाण्डुर एवेति।

अयोगव्यवच्छेदो नामउद्देश्यतावच्छेदकसमानाद्य-करणाभावाप्रतियोगित्वम्।

(स.भ.त. 39)

विशेषण से अन्वित एवकार अयोगव्यवच्छेदक होता है। जैसे—शंख पाण्डुर (सफेद) ही होता है। अयोगव्यवच्छेद से तात्पर्य है—उद्देश्यतावच्छेदक के समानाधिकरण अभाव का प्रतियोगी न होना।

(द्रष्टव्य : अन्ययोगव्यवच्छेद)

जैन न्याय पारिभाषिक कोश

३७

अर्थ (अभिधेय)

- अर्थः पुनरनेकशब्दसम्बन्धेन अभिधीयमानो वस्तुतया एकोऽभिधेयः।

(पंचा.त.प्र. 2)

‘अर्थ’ यानी अनेक शब्दों के सम्बन्ध से कहा जाने वाला वस्तुरूप से एक पदार्थ।

- ‘ऋ गतौ’, अर्यते गम्यते ज्ञायत इत्यर्थः।

(विशे.भा.,शि.हि.वृ. 80)

अर्थ शब्द गत्यर्थक ‘ऋ’ धातु से बना है, जो ज्ञात होता है, वह ‘अर्थ’ होता है।

- अर्थः शब्दस्याभिधेयम्।

(षोड.वृ. 13/4)

शब्द के वाच्य को ‘अर्थ’ कहा जाता है।

- अर्थो वाक्यस्य भावार्थः।

(ज्ञा.सा.वृ. 27/5)

वाक्य के वाच्य को ‘अर्थ’ कहा जाता है।

अर्थ (ज्ञेय)

- अर्थः अर्थक्रियासमर्थः प्रमाणगोचरो भावः द्रव्य-पर्यायात्मकः।

(न्या.कु. 2/7)

अर्थक्रिया-समर्थ, द्रव्य-पर्यायात्मक प्रमाण-दृष्ट भाव (पदार्थ) ‘अर्थ’ है।

अर्थ (द्रव्य)

- द्वाणि गुणा तेसिं पज्जाया अट्टसण्णया भणिया।

(प्र.सा. 1/87)

द्रव्य, गुण और पर्यायों को ‘अर्थ’ संज्ञा से

कहा जाता है। (अर्थात् द्रव्य, गुण, पर्याय—इन तीनों की ‘अर्थ’ संज्ञा है।)

- प्रतिक्षणं-स्थित्युदयव्ययात्मतत्त्वव्यवस्थं सदिहार्थ-रूपम्।

(युक्त्य. 48)

‘अर्थ’ का रूप प्रतिक्षण स्थिति, उदय और व्ययरूप तत्त्वव्यवस्था को लिये हुए होता है।

- अनेकपर्यायकलापभाजोऽर्थाः।

(तत्त्व.भा.वृ. 9/6.)

‘अर्थ’ अनेक पर्यायों के समूह वाला होता है।

- अर्यते इत्यर्थः, निश्चीयते इति यावत्।

(स.सि. 1/2/10)

जिसका निश्चय किया जाता है अर्थात् जो ज्ञान के द्वारा जाना जाता है, उसे ‘अर्थ’ कहते हैं।

- परापरपर्यायावाप्ति-परिहारस्थितिलक्षणोऽर्थः।

(प्र.सं.वृ. 7/67)

जो एक (नवीन) पर्याय की प्राप्ति (उत्पाद), पूर्व पर्याय का विनाश (व्यय) और स्थिति (धौव्य) से सहित होता है, वह ‘अर्थ’ (द्रव्य) कहलाता है।

- तद्द्रव्यपर्यायात्मार्थः।

(लघी. 2/7)

‘अर्थ’ द्रव्यपर्यायात्मक होता है।

- इयर्ति पर्यायान्, अर्यते वा तैः, इत्यर्थो द्रव्यम्।

(रा.वा. 1/17)